एकत्व की अनुप्रेक्षा करने वाला आत्मप्रिय होता है - साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा

सरदारशहर, 29 अगस्त, 2010।

ज्ञान, दर्शन कभी अलग नहीं है, आत्मा हमारी अपनी है, जितने संयोग है वे सब बाह्य है फिर भी आदमी अपना मानता है, गहराई से देखा जाए तो मनुष्य का अपना कुछ नहीं है, आत्मा जब प्रस्थान करती है तो शरीर भी साथ नहीं जाता है, आत्मा और शरीर का अलग होना ही मृत्यु है, उक्त विचार साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने तेरापंथ भवन में उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि आत्मा अकेली कर्म करती है जो कर्म करती है उसका फल भी आत्मा को ही भोगना पड़ता है, परलोक में भी आत्मा अकेली जाती है, बुरे कर्म करती है तो भी उसे बुरे कर्मों का फल आत्मा को भोगना पड़ता है, कोई दूसरा व्यक्ति उसके कर्मों में सहभागी नहीं बनता है। इसलिए मनुष्य सोच-सोचकर कदम रखे कि वह ऐसा लक्ष्य बनाए कि कर्मों का बंध न हो।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने यह भी कहा कि मनुष्य अकेला नहीं रहता है उसे द्वद्वांत्मकता में जीना होता है, मनुष्य का शरीर, आत्मा, परिवार, समाज से संबंध जुड़ते जाते हैं, मनुष्य कितना ही संबंध बना ले किंतु आखिर केन्द्र में मुज्य आत्मा ही होती है, एकत्व की अनुप्रेक्षा करने वाला व्यक्ति ही आत्मप्रिय होता है।

इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में मुंबई से समागत अहिंसा आर्ट गैलेरी के संभागी उपस्थित जिसमें मदन फूलफगर ने गीत की प्रस्तुति दी, नवभारत टाईज्स के संपादक अवधेश व्यास ने अपने विचार व्यक्त किये। सिरियारी धज्म जागरणा के संयोजक कमल पटावरी ने गीत प्रस्तुत किया।

तेरापंथ विकास परिषद का संयुक्त वार्षिक अधिवेशन का दूसरा दिन

सरदारशहर, 29 अगस्त, 2010।

तेरापंथ विकास परिषद के 16वें संयुक्त वार्षिकअधिवेशन के दूसरे दिन जिज्ञासा समाधान का सत्र चला जिसमें संस्था से संबंधित संभागियों ने अपनी-अपनी जिज्ञासाएं प्रस्तुत की। इस अवसर पर अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल, जीवन विज्ञान के प्रभारी मुनि किशनलाल, प्रेक्षाध्यान के बारे में मुनि कुमार श्रमण ने अपना उद्‌बोधन प्रस्तुत किया। जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय की उपकुलपति समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा ने विश्वविद्यालय की विकास योजनाओं की अवगति दी।

पूर्वजन्म अनुभूति शिविर 31 अगस्त से

आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में पूर्व जन्म अनुभूति शिविर दिनांक 31 अगस्त से 4 सितम्बर तक आयोजित होगा। प्रेक्षाप्राध्यापक मुनि किशनलाल ने जानकारी देते हुए बताया कि आत्मा है इसमें अनेक लोगों को संदेह रहता है, आत्मा है तब ही पूर्व जन्म और पुनर्जन्म होता है। भारतीय चिंतनधारा एवं प्रेक्षा प्राध्यापक मुनि किशनलाल की स्पष्ट अवधारणा है आत्मा है, उसका पूर्व जन्म भी है और पुनर्जन्म भी है उनका कहना है कि यदि किसी को संदेह हो वह पूर्वजन्म अनुभूति शिविर में भाग लेकर सच्चाई को जान सकात है। मुनि किशनलाल ने यहां से पूर्व दिल्ली, जयपुर, उदयपुर, सूरत, लाडनूं में सफलता पूर्वक पूर्वजन्म शिविरों का निर्देशन किया है, उनके द्वारा लिखित और साधकों के अनुभवों से परिपूर्ण अहा! जिन्दगी द्वारा प्रकाशित रहस्य पूर्व जन्मों की पुस्तक से तथा 'यात्रा पूर्व जन्म' की सीडी जी. न्यूज से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह शिविर आवासीय है इसमें कोई शामिल होना चाहे तो वह जीवन विज्ञान के प्रशिक्षक गिरीजाशंकर दुबे से तेरापंथ भवन में संपर्क किया जा सकता है।